

४४८  
८९

# हाजरी व चिल्ला

मौलाना सय्यद शाह  
फ़ख़रुद्दीन अशरफ़

सज्जादा नशीन  
दरगाह मख़दूम अशरफ़

786

92

## हाजिरी और चिल्ले के मामूलात ( आचार )

गौसे जमाना सरकार सय्यद मखदूम अशरफ  
जहांगीर समनानी अलैहिरहमा  
( मकतूबाते अशरफी-दरगाह के मामूलात से लिया गया )

### लेखक

हजरत मौलाना सय्यदशाह फखरुद्दीन अशरफ  
सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया दरगाह किछौछा  
शरीफ ( फैजाबाद )

अनुवादक

डाक्टर अब्दुल नईम अजीजी

104-जसौली, बरेली शरीफ



समस्त अधिकार पब्लिशर के हक में सुरक्षित हैं

नाम किताब : हाजिरी और चिल्ले के मामूलात

मुद्रतिब (संग्रह कती): हजरत मौलाना सय्यद शाह  
फखरुद्दीन अशरफ

सज्जादा नशीन — आस्ताना आलिया  
दरगाह किछौछा शरीफ  
( फैजाबाद )

( मखदूम अशरफ साहब की हस्तलिपि से मैटर लिया गया है )

प्रकाशन ग्रह :- दारुल उलूम मखदूम अशरफ  
दरगाह शरीफ—किछौछा

पब्लिशर : मखदूम अशरफ एकेडेमी  
दरगाह किछौछा  
शरीफ — ( फैजाबाद )

### इन्तेसाब ( समर्पण )

मैं अपनी इस किताब को अपनी वहन सय्यदा नूर फ़ातिमा के नाम से समर्पित करता हूँ जिनका अगाध प्रेम, सरपरस्ती, प्रोत्साहन एवं योगदान हमारी तरक्की का जरिया है।

### प्रस्तावना

मुझको दरगाह शरीफ की जिम्मेदारी संभाले हुए एक मुदत गुज़ गई लेकिन ऐसी कोई किताब नजर न आई जिसमें हाजिरी के आदाब और चिल्ला वगैरह के बारे में लिखा गया हो। यह मुकद्दस दरगाह जहां हजारों लाखों अकीदत मन्द आते हैं और नावाकिफ़ी की वजह से लोग उनको गुमराह करते हैं और रकम भी लूटते हैं और दरगाह व सज्जादा नशीन की बदनामी होती है, बस इन सब से अकीदत मन्दों को बचाने और उनकी सही रहनुमाई के लिए यह किताब लिखनी पड़ी ताकि लोग हाजिरी और चिल्ले के आदाब और सही तरीके से वाकिफ़ होकर कामयाबी हासिल करें और फैज पाएं।

फख़रुद्दीन अशरफ़

### सरकार मख़दूम अशरफ़ के दरगाह के मुकामात ( स्थान )

दरगाह शरीफ़ : भारत के उत्तर प्रदेश प्रान्त में जिला फैजाबाद से आजमगढ़ जाने वाली सड़क की दक्षिण दिशा में स्थित है। दरगाह शरीफ़ फैजाबाद से 84 किलोमीटर पूर्व और आजमगढ़ से 64 किलोमीटर पश्चिम को दक्षिण दिशा में स्थित है। अकबरपुर से 17 किलोमीटर और बसखारी से 4 किलोमीटर का फासला है। सरकार मख़दूम अशरफ़ की दरगाह एक तालाब के किनारे है जो चारों ओर से दरगाह शरीफ़ को घेरे हुए है। दरगाह शरीफ़ तक पहुंचने के लिए एक पुल पार करना पड़ता है जिसको "अशरफ़ पुल" कहते हैं। इस पुल से चन्द कदम दूर एक फाटक है जिसे "सलामी दरवाजा" कहते हैं। इसके बाद दूसरा गेट आता है जिसे "मलंग शाह का फाटक" कहते हैं। इसके चन्द कदम बाद तीसरा गेट पड़ता है जिसे "बाबुल हय्ये" कहते हैं। इस गेट से चन्द कदम के बाद "आस्ताना शरीफ़" की सरहद शुरू हो जाती है जिसे "रूहाबाद" कहते हैं और आबादी वाले भाग को "रसूलपुर दरगाह" कहते हैं। हज़रत मख़दूम साहब अलौहिर्हमा ने अपनी ज़िन्दगी में अपना हुज़रा एक टीले पर बनाया था जिसके तीन तरफ तालाब खुदवाया था।

विसाल ( देहान्त ) के बाद आपको इसी हुज़रे में दफन किया गया था जिस को हज़रत शाह अली सज्जादा नशीन ने अपनी सज्जादगी के जमाने में गुम्बद की शकल दे दी।



### खान्काहे मोअल्ला

सरकार मखदूम अशरफ साहब के आस्ताने से मिला हुआ पूरव की ओर एक मिट्टी चढ़ी हुई इमारत है जिसे खान्काह शरीफ कहते हैं। सरकार मखदूम अशरफ साहब अपनी जिन्दगी में इसी खान्काह शरीफ में शिक्षा दीक्षा दिया करते थे। हजारों आलिम, मोलवी, शैख और पीर फकीर हर समय इस खान्काह में मौजूद रहते थे। खान्काह ही से उनके खाने पीने की व्यवस्था होती थी। यहाँ से बड़े-2 आलिम और पीर औलिया शिक्षा दीक्षा और फैज लेकर निकले हैं और अनगिनत गुमराहों की रहनुमाई हुई है। सरकार मखदूम अशरफ समनानी शरीयत और तरीकत के महान विद्वान और सूफी थे और चिशितया सिलसिले के बड़े सूफियों और वलियों में आपकी गणना होती है। आपकी खान्काह का न केवल भारत बल्कि दुनिया की बड़ी खान्काहों में एक महत्वपूर्ण स्थान है और आज भी यह श्रद्धा केन्द्र बनी हुयी है और हजारों लाखों लोग फैज पा रहे हैं और इन्शा अल्लाह कयामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा।

### लहेदखाना

खान्काह के अन्दर हुजरा नुमा इमारत "लहेदखाना" कहलाता है। सरकार मखदूम अशरफ साहब ने खान्काह ही में एक अलग जगह इवादत के लिए बना रक्खी थी, जहाँ आप इवादत करते थे और रात में जिनों के बच्चों को पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि आपकी इवादत के दौरान अगर एक चिड़िया भी उधर से गुजरती थी तो उसके दो टुकड़े हो जाते थे। एक बार मखदूम साहब इस हुजरे में मौजूद थे कि एक बंद अकीदा आया और कहा कि मैं इनको उस वक्त तक वली नहीं मानूंगा जब तक जानवर इनकी विलायत न मान लें। इतना कहना था कि हजरत नूरुल ऐन की बिल्ली आई और हुजरे के चारों ओर घूमने लगी और फिर आकर हुजरे के दरवाजे के सामने अपना सर रख दिया और तभी से उसमें वह असर पैदा हो गया कि वह मखदूम अशरफ साहब के मतबख (किचन-रसोईघर) में आने वाले मेहमनों की तादाद बताते लगी।

### हजरत निजाम यमनी रहमतुल्ल अलैह

आप मखदूम अशरफ साहब के खास खलीफा हैं। आप हर समय मखदूम साहब के साथ रहते थे। आपने मखदूम साहब के लतीफों पर एक किताब तरतीब दी जो "लताइफे अशरफी" के नाम से जानी जाती है। आपका मजार खान्काह के दक्षिण ओर स्थित है। हजरत निजाम यमनी बहुत बड़े विद्वान और लेखक थे। अरबी और फारसी में आपको कमाल हासिल था। आपको तसव्वुफ और तरीकत के साथ-

साथ शरीयत की विधा में भी अपार ज्ञान प्राप्त था। आपकी पुस्तक “लताइफे अशरफी” फारसी साहित्य में एक स्थान रखती है जिसकी याददाश्त कमजोर होया जो औरत बांझ हो अगर वह आपके मजार के पास 40 दिनों तक बराबर अर्ज करती रहे तो जरूर मुराद पाएगी। “लताइफे अशरफी” के अलावा आप और भी किताबों के लेखक हैं। “एखलाक व तसव्वुफ” नामी रिसाला आप ही की देख रेख में निकलता था।

आप बड़ी करामत वाले बुजुर्ग थे और पानी पर मुसल्ला बिछाकर नमाज पढ़ते थे। सरकार मखदूम अशरफ साहब जब ‘यमन’ गए तो उन्हें मालुम हुआ कि यहाँ ‘निजाम’ नाम के एक मशहूर बुजुर्ग हैं जिनका कहना है कि उस पीर से मुरीद हूंगा जो मुझ से ज्यादा पहुँचा हुआ होगा। जब मखदूम साहब पहुँचे तो देखा कि एक व्यक्ति दर्या में मुसल्ला बिछाए हुए नमाज पढ़ रहा है। मखदूम अशरफ साहब ने दर्या में टहलना शुरू कर दिया। जब हजरत निजाम ने देखा तो चिल्ला पड़े, “मुझे कामिल पीर मिल गया जिसकी मुझे मुद्दत से तलाश थी।” आप मुरीद हो गये और मखदूम साहब की खिदमत में रहने लगे। आपका विसाल (देहान्त) अरबी महीने की जीकादा की 8 तारीख को मखदूम अशरफ साहब के विसाल के कुछ दिनों बाद हुआ।

### कुब्बा मुबारक ( गुम्मज )

इस जगह पर पहले एक छोटा सा हुजरा था। हजरत शाह अली सज्जादा नशीन ने इसे गुम्मज की शक्ल दी। सरकार मखदूम अशरफ के आने से पहले यहाँ दर्पण नाथ योगी की कोठी थी जो ऊँचाई पर इस लिए बना रखी थी कि योगी वहाँ से अपने चेहों को दर्शन दिया करता था। बाद में जब वह मखदूम साहब के हाथ पर मुसलमान हुआ तो इस कोठी को मखदूम साहब के सुपुर्द कर दिया। कुब्बा शरीफ ( गुम्मज ) के अन्दर दो मजार हैं। पूरब दिशा में हजरत अब्दुर्रज्जाक नूरुल ऐन का मजार है और पश्चिम की ओर हजरत मखदूम अशरफ साहब का मजार है।

**औलिया मस्जिद :-** कुब्बा मुबारक ( गुम्मज ) के पश्चिम ओर “औलिया मस्जिद” है। सरकार मखदूम अशरफ साहब अपनी जिन्दगी में इसी मस्जिद में बा जमा अत नमाज पढ़ा करते थे। कहा जाता है कि अगर कोई दो रक अत नफिल नमाज पढ़ने के बाद मखदूम अशरफ साहब के मजार पर जाता है तो अगर मकसद जायज है तो जरूर पूरा होगा। जिसे हजरत खिन्न अलैहिस्सलाम की जियारत का शौक है चालीस दिनों तक इस मस्जिद में नमाज अदा करे और मस्जिद की पश्चिम ओर घाट पर तहज्जुद की नमाज के बाद गुस्ल ( स्नान ) करे और फिर फत्र की नमाज पढ़े। अगर कुछ दिनों तक यह अमल करता रहे उसे जियारत जरूर नसीब होगी। मेरे वालिदे



बुजुर्गवार (पिताजी) को हुजूर सवरे कायनात सल्लाहो अलैहैवासल्लम की जियारत ख्वाब (सपने) में इसी मस्जिद में हुई थी। किताब "मेरातुल असरार" के लेखक हजरत अब्दुरहमान चिश्ती को यहाँ हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम की जियारत और मुलाकात हुई थी जो हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्ला त आला अलैह के हुक्म से दरगाह शरीफ आये थे जिसका जिक्र आपने अपनी किताब में किया है।

### कब्रिस्तान

आस्ताने के सामने जो कब्रिस्तान है वह "सज्जादा नशीनों का कब्रिस्तान" कहलाता है। मखदूम साहब के इत्तकाल के बाद जो भी सज्जादा नशीन इत्तकाल करता है उसे इसी कब्रिस्तान में दफन किया जाता है जैसा कि मखदूम (हस्तलिपियों) के देखने से पता चलता है। ऐसा इसलिए है कि सज्जादा नशीनों की अहमियत और मुकाम बरकरार रहे। दो मजार छड़ से गिरे हुए हैं। एक शाह हसन साहब का और दूसरा शाह हुसैन साहब का है जो हजरत अब्दुरज्जाक नूरुल ऐन के साहबजादे थे।

### सय्यदा बीबी सुल्ताना खातून

आप नजीबुन्तरफैन सैदानी थीं (माँ बाप दोनों सय्यद थे)। आप की शादी सरकार मखदूम अशरफ साहब ने अपने नूर नजर हजरत अब्दुरज्जाक से की थी। आप का मजार आस्ताने की दक्खिन तरफ एक हुजरे के अन्दर है जो 'सुल्ताना बीबी का हुजरा' कहलाता है। आप के पांच पुत्र थे-1. शाह हसन 2. शाह हुसैन 3. शाह शम्सुद्दीन 4. शाह फरीद 5. शाह अहमद।

1- हजरत शाह हसन रहमत उल्लह अलैह :- आप को जौनपुर की विलायत सौंपी गई थी। आप तबलीग और तहरीर का काम अंजाम देते थे और ज्यादातर जौनपुर ही में रहते थे।

2- हजरत शाह हुसैन रहमतउल्लह अलैह :- हजरत अब्दुरज्जाक नूरुल ऐन के विसाल के बाद आप सज्जादा नशीन हुए। आप मखदूम सानी (द्वितीय मखदूम) थे। सरकार मखदूम अशरफ आपको अपना सानी (दूसरा) कहते थे।

3- हजरत शाह शम्सुद्दीन रहमत उल्लह अलैह :- आप का विसाल (देहान्त) 18 साल की उम्र में हो गया था। आप का मजार शरीफ आप की माँ के मजार की पश्चिम ओर नीर शरीफ (तालाब) के किनारे पर है।

4-हजरत शाह फरीद रहमत उल्लह अलैह :- आप का मजार बसौड़ी जिला बाराबंकी में है। आप के खानदान के लोग आज भी बसौड़ी के इलाकों में मौजूद हैं। आप का मजार आज भी श्रद्धा केन्द्र बना हुआ है।

**5- हजरत शाह अहमद रहमत उल्ला अलैह :-** आप का जन्म सरकार मखदूम साहब के विसाल के बाद हुआ था। आपका मजार जायस जिला रायबरेली में है। आप के खानदान के लोग आज भी जायस में मौजूद हैं।

### **नीर शरीफ ( तालाब )**

सरकार मखदूम अशरफ साहब के आस्ताने के चारों ओर एक तालाब है। जिसकी खुदाई खुद मखदूम साहब ने फकीरों और शैखों व बुजुर्गों के साथ मिल कर की थी। खोदने वाले हर फावड़े पर कलमा और दरूद शरीफ पढ़ते थे। वे नमाजी और बे अमल को खोदना मना था। मखदूम साहब ने इसमें जमजम का पानी काफी मात्रा में डलवाया है। इसके अन्दर सात सोते हैं। इस तालाब को 'नीर' के नाम से जानते हैं। हजरत मोहम्मद देहलवी रहमत उल्ला अलैह ने इसके पानी को आसेब जदा (भूत प्रेत वालों) के लिए तिरयाक (विष हर औषधि) कहा है। दरगाह शरीफ आने वाले तमाम जायरीन (तीर्थयात्रियों) को जरूरी है कि इसमें एक बार गुस्ल (स्नान) करें।

### **चहार गुजर ( चौराहा )**

दरगाह शरीफ से 1/2 किलो मीटर दूर बग्घा तालाब के किनारे उत्तर दिशा में चहार गुजर स्थित है। मखदूम साहब सुबह शाम चहारगुजर जाया करते थे और अपने मुरीदों को भी वहां जाने को कहते थे। आप कहा करते थे आप कहा करते थे कि अगर किसी को कुतुब और अबदाल (वलियों की श्रेणियों हैं) से मिलना है तो चहारगुजर जाये और जो विलायत की तलाश में आया है तो ज्यादा वक्त यहां गुजारे उसका मकसद जरूर पूरा होगा। आप जोहर की नमाज प्रायः चहारगुजर पर अदा करते थे। वहां पर एक कनाती मस्जिद (छोलदारी की मस्जिद) और एक छोटा सा हुजरा आज भी मौजूद है।

### **बीबी बिल्ली का मजार**

दरगाह शरीफ से लगभग 3 किलोमीटर पूरब की ओर दारुल अमान तालाब के किनारे बीबी बिल्ली का मजार है। मखदूम साहब की इबादत का इस पर ऐसा असर पड़ा कि इसने इधर उधर जाना छोड़ दिया और हर समय मखदूम साहब के हुजरे के पास बैठी रहती थी सिर्फ फकीर मेहमानों की गिनती की सूचना बावर्ची को देने के लिए उठती थी कि आज इतने लोगों का खाना पकना चाहिये। एक बार एक आदमी भेष बदलकर मखदूम साहब को परखने के लिए आया कि देखें हमें पहचान सकते



हैं या नहीं। बिल्ली ने इसका वस्त्र उतार कर राज खोल दिया। बाद में वह मखदूम साहब से मुरीद हो गया। एक बार फकीरों और बुजुर्गों के पीने के दूध में सांप गिर गया जिससे दूध जहरीला हो गया। बिल्ली ने सब को इत्तला दी मगर कोई समझ न सका। लोगों को बचाने के लिए दूध में कूद कर जान दे दी। मखदूम साहब ने बिल्ली को तालाब के किनारे दफन करा दिया। आज भी लोग बिल्ली के मजार पर जाते रहते हैं।

**हजरत जहांगीर सानी रहमत उल्लह अलैह :-** आप का मजार शरीफ आस्ताने के सामने टीन के बंगले में है। आप के वालिद हजरत जाफर लाड कट्टा नवाज दरगाह के सज्जादा नशीन थे। आप पैदाइशी वली थे। आपकी बुजुर्गों की वजह से लोग आप को 'जहांगीर सानी' कहते थे।

**जिन्नाती मस्जिद :-** मखदूम साहब के आस्ताने की पश्चिम दिशा में एक छोलदारी की मस्जिद है जिसे 'जिन्नाती मस्जिद' कहते हैं। यह जिन्नों के लिए थी। इसके आंगन के सामने शाह मोहामिद जो दरगाह के सज्जादा नशीन थे, जिन्हें शहीद कर दिया गया था, का मजार एक घाट के पास है। इसके बारे में कहा जाता है कि इसके पानी में जमजम के पानी की तासीर है।

### हाजिरी

हाजिरी कहते हैं मौजूद होने या उपस्थित होने को। हाजिरी दो प्रकार की होती हैं। एक तो आस्ताने पर फातेहा पढ़ने के लिए आना। दूसरी जो जादू या जिन भूत वृगैरह से परेशान हैं उसकी हाजिरी। इस हाजिरी में उसे बिठाकर दूसरे के द्वारा सम्बोधित किया जाता है ताकि उस पर जो भी है सामने आ जाये। पहली हाजिरी वक्ती ही। दूसरी हाजिरी में कुछ समय लग जाता है। आस्ताने पर हाजिरी का रिवाज बहुत पुराना है। सरकार मखदूम अशरफ बादशाह थे। जिस तरह अपनी बादशाही में वह अपनी प्रजा के दुख दर्द और फरियाद खुले आम सुना करते थे, उसी तरह विसाल के बाद भी आपने यह सिलसिला जारी रखा। पर्दा करने से पहले आप ने फरमाया था कि जिस तरह मैं आज तुम लोगों के बीच हूँ उसी तरह पर्दा करने के बाद भी रहूँगा, सिर्फ बीच में एक पर्दा होगा जो नजर वालों के लिए रोक नहीं होगा।

यहां हाजिरी से मतलब है आस्ताने पर बैठकर दूसरे आदमी द्वारा जादू या आसेब को हाजिर कराना। इसी को हाजिरी कहते हैं। आस्ताने पर बैठकर चन्द रुबाई (पद्य की चार लाइनें चौपाई) पढ़ने के बाद छुपी हुई चीज का जाहिर होना हाजिरी कहलाता है।

### हाजिरी का टाइम टेबुल

हाजिरी के टाइम टेबुल की पाबन्दी जरूरी है। इसके बिना फायदा नहीं होगा और मकसद (उद्देश्य) बेकार हो जायेगा।

**पहली हाजिरी :-** फज्र की नमाज के बाद से सूरज निकलने तक।

**दूसरी हाजिरी :-** दस बजे दिन से लेकर 12 बजे दिन तक।

**तीसरी हाजिरी :-** तीन बजे से लेकर मगरिब की अजान तक।

हाजिरी के दौरान नमाज का वक्त आ जाने पर मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ें और फिर आकर हाजिरी में बैठ जायें। हाजिरी के दौरान इधर उधर बैठ कर वक्त न बर्बाद करें नहीं तो एक दिन या हफ्ते में होने वाले काम को महीनों और बरसों लग सकते हैं।

**नोट :-** दिये गये वक्तों में चन्द मिनट की कमी या वेशी से नुकसान नहीं।

हाजिरी के लिए किस तरह बैठना चाहिये।

1. दोनों घुटनों को तोड़कर जानू के सहारे बैठना चाहिये।
2. नजर नीची होनी चाहिये।
3. चेहरा ऊपर उठा होना चाहिये।
4. हाथ दोनों जानू पर होना चाहिये।

### हाजिरी की शर्तें

1. हाजिरी में बैठने से पहले नीर शरीफ (तालाब) में गुस्ल जरूरी है।
2. गुस्ल रोज करना जरूरी है।
3. अगर मरीज औरत या मर्द मुसलमान हैं तो उनको हाजिरी से पहले वजू करना जरूरी है।
4. हाजिरी के दौरान वावजू रहना जरूरी है।
5. हाजिरी से पहले दो रकात नमाज नफिल पढ़कर फातिहा पढ़ना और हजरत मखदूम अशरफ साहब को इसका सबाव पहुँचाना जरूरी है।
6. हाजिरी के दौरान इधर उधर न देखना और ख्याल जमाए रखना जरूरी है।
7. ऐसा कपड़ा न पहनना चाहिये जो हाजिरी के वक्त खिसक जाये या किसी की निगाह बदन पर पड़े।



8. खुशबू इत्र वगैरह न लगाया जाये।
9. बालों में खुशबूदार तेल न लगायें।
10. औरतें लिपिस्टक या कीमती जेवर (गहने) न पहनें।
11. अगर औरत जवान है तो उसके साथ महरम (शौहर-बाप-चचा या भाई) वगैरह साथ में हों।
12. औरतें महीने की हालत में हाजिरी में न आयें, यहां तक कि ऐसी हालत में उनका दरगाह की वाउन्डरी में आना भी सख्त मना है।
13. हाजिरी के दौरान मियां बीबी हमबिस्तर होने से एकदम परहेज करें।

#### हाजिरी के दौरान परहेज

ऐसा खाना पीना इस्तेमाल न करें जिससे गैस बने। औरत गैर मर्द से बात न करे। झूठ, किसी की बुराई, चुगलखोरी, किसी पर ऐब लगाने, जोर से हंसने, चिल्लाने, सर पटकने वगैरह से बिल्कुल परहेज करें।

#### हाजिरी कौन करा सकता है?

1. हाजिरी कराने वालों को नमाजी होना चाहिये।
2. हाजिरी कराने वाले की उम्र 40 साल या इसके लगभग होनी चाहिये।
3. हाजिरी कराने वाले के दाढ़ी होनी चाहिये।
4. शादी शुदा होना चाहिये।
5. चाल चलन अच्छा होना चाहिये।
6. दीनी मसले का जानकार होना चाहिये।
7. हजरत मखदूम अशरफ साहब के औराद और वजायफ का खूब जानने वाला होना चाहिये।
8. हाजिरी अकेले में न कराता हो बल्कि अपने साथ घर के लोगों को बैठने को भी कहता हो।
9. कुरआन शरीफ की ज्यादा से ज्यादा आयतें याद हों।

#### हाजिरी पर बैठने की जगहें

सुबह की हाजिरी के वक्त जिन्नाती मस्जिद की तरफ बैठें और अगर साथ में कायदे का आदमी नहीं है तो तीनों वक्तों की हाजिरी आस्ताने ही पर दे। दोपहर की

हाजिरी आस्ताने की दक्खिन ओर नीर शरीफ (तालाब) के किनारे बैठना चाहिये और शाम की हाजिरी आस्ताने पर बैठकर देना चाहिये। नमाज मगरिब के बाद थोड़ी देर लहद खाने के सामने बैठना चाहिये।

### हाजिरी कब नहीं हो सकती।

1. दोपहर में हाजिरी नहीं हो सकती।
2. फज्र की नमाज से पहले हाजिरी नहीं हो सकती।
3. महीने के दिनों में औरतों की हाजिरी नहीं हो सकती।
4. अगर औरत के पेट में बच्चा है तो उसको हाजिरी से बचना चाहिये।
5. सिर्फ पोशीदा हाजिरी (गुप्त हाजिरी) लेनी चाहिये।
6. अगर औरत का जिस्म कमजोर है तो आस्ताने को देखती रहे।

### हाजिरी कौन नहीं करा सकता।

1. 18 साल से कम उम्र वाला।
2. झूठा, धोखेबाज, मक्कार।
3. जो नमाज रोजे का पाबन्द न हो।
4. बदचलन, ऐयाश, शराबी।
5. पागल, जाहिल।
6. चोर, उचक्का।
7. अजनबी जिसके बारे में जानकारी न हो।

### हाजिरी कराते वक्त क्या पढ़ना चाहिये।

1. हाजिरी कराने से पहले वजू करना चाहिये फिर 2 रकात नफिल नमाज पढ़ लेनी चाहिये फिर मखदूम अशरफ साहब के नाम फातिहा पढ़ कर बच्चों में मिठाई बाँटनी चाहिये।

2. 7 बार आयतलकुर्सी, एक बार अल हम्दो, 3 बार कुल हो अल्ला पढ़ कर मरीज (मर्द या औरत जो भी हो) के कान में फूँक दें और 3 बार सूरए जिन्न भी पढ़ कर फूँकें। मरीज (औरत या मर्द) के दाहिनी तरफ बैठें, हाजिरी कराने वाला खुद



मरीज न हो। लोबान और गोगिल की धूनी बीच बीच में देनी चाहिये। और हाजिरी के बीच में मरीज को बेदे मुश्क, अर्कें गुलाब एक गिलास में मिला कर पिलाना चाहिये। सरकार मखदूम अशरफ की शान में मनकबत और रुबाई (शेर और चौपाई) पढ़ना चाहिये।

### हाजिरी के बाद क्या करना चाहिये।

भूत प्रेत जिन्न या जादू वगैरह के मरीज को जब हाजिरी से फुर्सत मिल जाये तो फौरन हाथ मुंह धो कर आराम करना चाहिये। अगर चाय या हल्का खाना वगैरह खा ले तो ज्यादा अच्छा है। हाजिरी के बाद थोड़ी देर तक लहदखाने के करीब अदब के साथ बैठना जरूरी है। और दिल में मखदूम अशरफ साहब से अपनी परेशानी दूर होने के लिए दुआ करनी चाहिये। अगर इन तमाम ऊपर लिखी बातों पर पाबंदी की जाये तो हर परेशानी से जल्द से जल्द छुटकारा मिल जाये।

**मिन्नत:-** अगर आपने मखदूम अशरफ साहब के आस्ताने पर यह इरादा कर लिया है कि अगर तमाम रोग और परेशानी से छुटकारा मिल जायेगा तो फलां (अमुक) चीज या काम करूंगा तो मतलब पूरा हो जाने पर अपना वादा फौरन पूरा करना चाहिये। और अगर उसी वक्त पूरा करने का मौका नहीं मिल पाता तो तो जल्द से जल्द अपने घर से वापस आकर मिन्नत पूरी करनी चाहिये। अलबत्ता अगर किसी मजबूरी से देरी हो जाये तो घबराने की बात नहीं। हाँ अपना वादा याद रहे और मौका आते ही पूरा करे।

**फातिहा :-** मजार शरीफ पर जाने से पहले औलिया मस्जिद में दो रकात नफल की नमाज पढ़ें फिर मजार पर हाजिर हों। अगर हो सके तो मजार शरीफ पर गुलाब का फूल चढ़ायें और मजार के दाहिनी ओर खड़े होकर दिल ही में अल्हम्दो शरीफ, आयतल कुसी, चारों कुल, अलिफ लाममीम और शुरू और आखिर में 3-3 बार दरुद शरीफ पढ़ कर सरकार मखदूम अशरफ की रूहे पाक को इसका सवाब पेश करें और गिड़गिड़ा कर अपनी मुराद माँगें।

**चिल्ला :-** चिल्ले की शुरूआत खिलाफते सुगरा (छोटी खिलाफत) से हुई है और यह हुजूर सल्लाहो अलैहे व सल्लम की सुन्नत की पैरवी है। अन्तर केवल इतना है कि बुजुर्गों ने अपने ढंग से किया है और अगर यह कहा जाये कि चिल्ला शब्द की बुनियाद ऐतकाफ (तन्हाई अख्तियार करना) की रोशनी में डाली गयी है तो बेजा न होगा। चिल्ला का असली मफहूम (अर्थ या सार) नफ्स कुशी (मोह नष्ट करना) है लेकिन दूसरी तरह से इरादा भी चिल्ले की सूची में आता है। लेकिन मैं यह समझाता हूँ कि चिल्ला रूह की गिजा (आहार-टानिक) है जिसका तरीकत में एक स्थान है।

अफसोस आजकल लोगों ने चिल्ले को एक तमाशा बना रखा है। गांठें लगाना और तागा बांधना भी चिल्ला समझते हैं जो न तो किसी बुजुर्ग से सम्बन्धित है न ही साबित है।

**चिल्ला कैसे करना चाहिये:-** चिल्ला करने वाले को मखदूम अशरफ साहब के आस्ताने पर हाजिर होना पड़ेगा और हाजिरी से पहले गुस्ल, वजू और नफल नमाज दो रकात पढ़ना जरूरी है। इसके बाद सरकार मखदूम अशरफ साहब के मजार शरीफ पर फातिहा पढ़ कर अर्ज करें कि मैं आपके आस्ताने पर 40 दिन तक चिल्ले पर बैदूंगा और मेरी यह मुराद है पूरी हो।

चिल्ला करने के लिए औरतों के लिए भी यही शर्तें हैं अलवत्ता वह मजार पर न जाकर जनानी मस्जिद में बैठकर अपनी मुराद मांगें और अर्ज करें।

**चिल्ला कितने दिन का होता है:-** बुजुर्गों ने जो चिल्ला किया है वह 40 दिनों का होता है लेकिन अगर आस्ताने पर 40 दिन न ठहर सकें तो 21 दिन या 14 दिन तक चिल्ला कर सकते हैं लेकिन जो फायदा 40 दिन के चिल्ले में है वह इनमें नहीं अलवत्ता सरकार साहिबे मजार के नजर की बात है कि एक दिन में भी पूरा फायदा दे दें।

**चिल्ले के दौरान परहेज :-** 1. दूध, अन्डा, गोश्त, मछली, घी, तेल, मिर्च, खटाई वगैरह और घी व तेल में तली हुई चीज। 2. दूध की चाय 3. चावल 4. ज्यादा खाना खाना 5. रेशमी कपड़ा 6. दुनियादारी की बातें 7. पान, बीड़ी सिगरेट 8. दरगाह की बाउन्डरी से बाहर जाना 9. किसी के पास बैठना 10. गपशप करना।

**चिल्ले के दौरान इबादत :-** फर्ज नमाजों के इलावा नफल नमाज, कुरआन शरीफ की तिलावत, आस्ताने की बराबर हाजिरी, औरतें इबादत और फातिहा जनानी मस्जिद में करें।

**चिराग शरीफ :-** चौखुन्टा लोहे, तांबे, सोने या चांदी का बना हुआ चिराग होता है जो सरकार मखदूम साहब की जिन्दगी में आस्ताने पर इसी शक्ल में जलता था, आज भी वही शक्ल है। हजरत मखदूम अशरफ साहब के पर्दा करने के बाद आपके भांजे हजरत हाजी अब्दुर्रज्जासक नूरुल ऐन साहब चिराग जलवाते रहे और आपके पर्दा करने के बाद हर गद्दी नशीन को यह जिम्मेदारी विरासत में मिलती रही और सब अपने अपने जमाने में चिराग में चिराग शरीफ उसी तरह रौशन करते रहे।

मखदूम अशरफ की हस्तलिपि देखने से यह तहरीर मिली कि मेरे मजार का जला हुआ चिराग आसेव और भूत प्रेत, जादू वगैरह वालों के लिए उतना ही फायदे वाला साबित होगा जितना कि आस्ताने पर हाजिरी देने से फायदा मिलता है।



**चिराग़ शरीफ जलाने की मुह्त ( अवधि ):-** चिराग़ शरीफ कम से कम 40 दिन आस्ताने पर जलाना चाहिये, इससे कम में वह असर न होगा जिसके लिए हजरत मखदूम अशरफ साहब ने फरमाया है।

**चिराग़ शरीफ में तेल का इस्तेमाल :-** हजरत मखदूम साहब की हस्तलिपि से मीठे तेल का इस्तेमाल साबित है और आप के खानदान वालों ने भी मीठे तेल पर जोर दिया है। मजबूरी में कड़वा तेल भी इस्तेमाल किया जा सकता है। चिराग़ में सफेद कपड़े की बत्ती दें, कपड़ा नया हो तो बेहतर है वरना पुराना साफ सुथरा कपड़ा भी बत्ती के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

### **चिराग़ शरीफ रौशन करने का तरीका**

पहले गुस्ल फिर वजू और दो रकात नफल की नमाज पढ़ें और फातिहा पढ़ कर मखदूम साहब की रूहे पाक को सवाव पहुंचाये और रू. 1/25 चिराग़ की जकात गरीबों को दें फिर साफ कपड़े पर रखकर चिराग़ में तेल डालें और रौशन करें। चिराग़ जलाने के बाद 7 बार आयतल कुर्सी, एक बार अलहम्दो, उबार कुल हो अल्लाह पढ़कर अपने ऊपर दम कर लें या कोई मरीज (मर्द-औरत) हो तो उस पर भी दम कर दें और लगभग एक गज दूरी पर खुद बैठें और मरीज को बिठाएं और फिर मखदूम साहब की शान में रुवाई पढ़ना शुरू करें जो कुछ होगा वह इस तरह करने से इन्शा अल्लाह जाहिर हो जायेगा। ऐसा कुछ दिनों तक करना होगा। चिराग़ को कम से कम आधा घन्टा रौशन करना चाहिये, ज्यादा टाइम की कैद नहीं। अगर रोज चिराग़ नहीं जला सकते तो हर जुमेरात ही को रौशन करें और अगर यह भी न कर सकें तो हर नौचन्दी जुमेरात को रौशन करना बहुत ही जरूरी है तभी चिराग़ से इन्शा अल्लाह फायदा उठा पायेंगे।

**नोट :-** चिराग़ शरीफ को फूल से गुल करना चाहिये (बुझाना) अगर गुलाब का फूल हो तो बेहतर है। चिराग़ शरीफ को किसी ऊँची पाक जगह पर रौशन करना चाहिये अगर लकड़ी का बक्स बनवा कर उस पर रख कर जलायें और बाद में गुल करके उसी बक्स में इस को रख दें तो बहुत ही अच्छा होगा।

**चिराग़ कौन कौन न जलाये:-** औरत, नाबालिक बच्चा, दीवाना, पागल, कोढ़ का मरीज वगैरह वगैरह।

**चिराग़ जलाने का वक्त :-** नमाज मगरिब या इशा के बाद।

चिराग शरीफ जब रोशन हो जाय  
तो मुसलमान मुन्दरजा जेल रुबाई पढ़ते रहें।  
रुबाई यह है।

ऐ अशरफे जमाना जमाना मददनुमा  
दर हाय वस्ता राज कलिदे करमकुशा  
अशरफ नंहग दरिया बसीना दारद  
दुशमन हमेशा पुरगम तु जिकरे दोस्त दारद

नोट :-

आप वाकई मखदूम सिमनानी के मानने वाले हैं तो आप सज्जादा नशीन आस्ताने का पता लगायें क्योंकि सज्जादा नशीन का रुहानी लगाव सातवें मजार से होता है। और सातवें मजार का खास करम सज्जादा नशीन पर होता है। तरीक़त के मुताबिक़ साहबे मजार खुद अपना जानशीन नामज़द करता है। जिस तरह हाजरी ज़रूरी है नीर शरीफ में नहाना ज़रूरी है उसी तरह से सज्जादा नशीन की भेंट ज़रूरी है। सज्जादा नशीन की दोआ मखदूम सिमनानी ज़रूर कुबूल करेंगे। और आपका काम जल्दी होगा। सज्जादा नशीन साहब का क़याम बसखारी शरीफ में रहता है। किसी से पूछने पर आपको मालूम हो जायेगा।

सौजन्य से  
इब्नेजामिया ब्लॉग



+91 7317380929

+91 8574533094

+91 7282896933

aalerasoolahmad@gmail.com

**AALE RASOOL AHMAD**

Office Incharge, Lucknow



**All India Ulama & Mashaikh Board**

الاندلس علماء ومشايخ بورڈ

AN APPEX BODY OF SUNNI MUSLIMS



aalerasoolahmad



@aaleashrafi



aalerasoolahmad.blogspot.in

**Head Office :** 20-Johri Fam, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110 025

**Contact :** 09212357769 | **Email :** aiumbdel@gmail.com | **Website :** www.aiumb.com

**U.P. State Office:** 106/73, Nazar Bagh, Cantt. Road, Lucknow-226 001